परमेश्वर की ओर से मापदण्ड (2 तीमुथियुस 2)

''मसीह यीशु के अच्छे योद्धा की नाईं मेरे साथ दुख उठा'' (2 तीमुथियुस 2:3)।

अध्याय 2 में पौलुस ने ''योद्धा'' (2:3, 4), ''गृहस्थ'' (2:6), ''काम करने वाला'' (2:15), ''आदर का बर्तन'' (2:21), और ''दास'' (2:24) जैसे कई जाने पहचाने वाज़्यांशों का इस्तेमाल किया है। इन शज़्दों के इर्द – गिर्द मसीह के एक समर्पित चेले द्वारा निष्ठा की एक खूबसूरत तस्वीर बनाई गई। तीमुथियुस के लिए न केवल पौलुस द्वारा दिखाई गई जीवन शैली का अनुसरण करना आवश्यक था बल्कि ऐसा करने में दूसरे मसीहियों की सहायता करनी भी ज़रूरी थी।

इस अध्याय के कुछ भाग की प्रवृज़ियां और विशेषताएं, लोग और व्यज़्तित्व ऐसे हैं जिनके कारण हम गुमराह हो सकते हैं। पौलुस का सज़्पूर्ण उद्देश्य परमेश्वर के बालकों को उसके मापदण्ड को लागू करने (2:1–13), उलझनों से बचे रहने (2:14–18) और दूसरों को मन फिराव के लिए अगुआई करने वाला जीवन बिताने (2:19–26) के लिए उत्साहित करना था।

पाठ 5: स्थिर रहने वाले मसीही का मापदण्ड (2:1-13)

मापदण्ड का विवरण (आयतें 1-8)

अंक शास्त्री बताते हैं कि बाइबल में ''7'' को सज़्पूर्ण अंक माना जाता है। सत्य हो या कल्पना, लेकिन पौलुस ने सात विशेषताएं बताई हैं जो एक समर्पित मसीही सेवक में होनी आवश्यक हैं।

पहली, मसीही व्यज़्ति के लिए ''उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु में है, बलवन्त''[1] होना

आवश्यक है (2:1)। तीमुथियुस इस स्थिति को परमेश्वर के अनुग्रह से पा सकता था।[2] कोई भी, चाहे वह सुसमाचार प्रचारक ही ज़्यों न हो इतना पहुंचा हुआ नहीं है कि वह अपने आप को ऐसा समझे जैसे कि वह कुछ भी कर सकता है (2 कुरिन्थियों 3:4–6)। सुसमाचार के हर प्रचारक अर्थात इवैंजलिस्ट के लिए परमेश्वर के साथ एक निजी सज़्बन्ध बनाना आवश्यक है (याकूब 4:8)।

दूसरी, मसीही व्यज़्ति के लिए उन सच्चाइयों को जो पौलुस ने तीमुथियुस को दी थीं, दूसरों को "सौंपना"[3] आवश्यक है (2:2)। यदि पहली प्राथमिकता यह सुनिश्चित करने की थी कि तीमुथियुस बलवन्त हो, तो दूसरी प्राथमिकता दूसरों को दृढ़ करने के लिए उन्हें वही बातें बताने अर्थात भेड़ों को चराने की थी!

उदाहरण के लिए, बाइबल की कोई एक शिक्षा (जैसे मन फिराव) को चुन लें और किसी मित्र से उस शिक्षा के विभिन्न चरणों पर चर्चा करें। उसे यह समझाने और इस आज्ञा के बारे में ध्यान दिलाने के लिए आप ज़्या करेंगे? सुसमाचार प्रचारक को वही करने के लिए कहा गया है जो पौलुस ने तीमुथियुस को सिखाया (या उसके नाम लिखी अपनी पत्रियों में शामिल किया) था। सुसमाचार प्रचारक के लिए एक गंभीर छात्र होना बहुत ही आवश्यक है!

इन सच्चाइयों को "विश्वास योग्य" लोगों को बताना आवश्यक है। यदि एक सुसमाचार प्रचारक अपना अधिकतर अध्ययन और समय उन लोगों को बदलने की कोशिश में लगा देता है जो उदासीन और हठी हैं, तो विश्वासी मसीहियों को न तो कभी चुनौती दी जा सकेगी और न ही सिखाया जा सकेगा। यह कितने दुख की बात है!

तीसरी, एक अच्छे योद्धा की तरह "दुख[4] उठाना" आवश्यक है (2:3; देखिए इब्रानियों 10:32–34)। इसमें दो विशेषताएं शामिल हैं (1) सेवा करते हुए उसका मन "दुख" सहने या कठिनाई सहने को तैयार है। विशेष ज़ोर इस बात पर है कि एक अच्छा सिपाही परीक्षा के समय पीछे नहीं मुड़ता। (2) वह इस बात में सावधान रहता है कि ज़्या करना है और कहां जाना है, ज़्योंकि "जब कोई योद्धा लड़ाई पर जाता है, तो ... अपने आप को संसार के कामों में नहीं फंसाता[5]" (2:4)। उसके मन का उसकी पसन्द से पता चलता है ताकि "अपने भर्ती करने वाले को प्रसन्न[6] कर सके।"[7] यह ऐसा सिपाही है जो विश्वास में बने रहकर या दूसरे के लिए हर रोज़ अपना क्रूस उठाकर, अपना इन्कार करेगा (लूका 9:23)।

चौथी, वह "विधि के अनुसार लड़ता[8]" है। प्रतिस्पर्धाओं में आज बिना नियम तोड़े और दण्ड पाए खेलें होती ही नहीं हैं। ज़्या जीवन के खेल में हमारी स्थिति इससे कुछ बेहतर है। कुश्ती को, विशेषकर स्पष्ट तौर पर नकली, सरकस की तरह और बनावटी दिखाया जाता है। ऐसा सुसमाचार प्रचारक जिसका मन और सेवा एक दिखावटी है, एक अपमान है!

पांचवीं, "परिश्रमी गृहस्थ" (2:6) की तरह होना आवश्यक है। आत्मिक सेवा में जब तक कोई थककर चूर होने को तैयार नहीं है, तब तक उसे भरपूरी का जीवन पाने या उद्धारकर्ज़ा के मीठे फल का भागीदार बनने का कोई आश्वासन नहीं मिल सकता है (देखिए यूहन्ना 10:10; 13:17; मज़ी 11:28, 29)।

छठी, सब बातों में ''समझ''[9] की खोज के लिए प्रभु की ओर मुड़ना आवश्यक है (2:7)। ऐसी अन्तर्दृष्टि पौलुस की बात सुनकर उस पर ''ध्यान''[10] देने की हमारी इच्छा पर निर्भर करती है। जब तक कोई मसीह की इच्छा का अध्ययन करने के लिए पर्याप्त समय नहीं लगाता, तब तक वह उस व्यक्ति को किसी भी बात में समझ नहीं देगा (यूहन्ना 7:17; मत्ती 5:6)।

सातवीं, मसीह को ''स्मरण''[11] रखना आवश्यक है (2:8)। पौलुस ने बताया कि हमें क्या याद रखना है:

> *उसकी सामर्थ:* एक विलक्षण विजय – ''मरे हुओं में से जी उठा।'' मसीह का जी उठना प्रेरितों के संदेश का आधार था (2:24–36; 3:15; 4:2, 10, 33)। इस संदेश पर ध्यान देने (और समझने) पर यह किसी भी परेशान मन को जो मसीह के अपना प्राण देने वाले प्रेम के आगे समर्पण करता है, साहस देगा! किसी प्रियजन की कब्र पर खड़े होकर इस बुनियादी शिक्षा पर ध्यान करें। देखें, उसका जी उठना कितना बहुमूल्य वायदा और विशाल यादगार बन जाता है!
>
> *उसका खानदान:* भविष्यवाणी युक्त अतीत – ''दाऊद की संतान'' (देखिए प्रेरितों 13:22, 23; 2:25–36)। हमारे उद्धारकर्ता का महत्व न केवल पुनरुत्थान के सम्बन्ध में बल्कि उस पीढ़ी से भी है जो इसे परमेश्वर के अनन्त उद्देश्य के भाग के रूप में दिखाती है। यदि यहूदी इस पर विश्वास करते तो उनका विश्वास बहुत मज़बूत होना था!
>
> *उसकी प्रतिज्ञा:* वर्तमान अर्थपूर्ण संदेश – ''[पौलुस के] सुसमाचार के अनुसार'' – जिसमें उसकी प्रतिज्ञाएं शामिल हैं (देखिए इफिसियों 1:3–23; 2:1–10; 3:8–13; 5:23–27; रोमियों 1:16, 17; गलतियों 1:11, 12)। प्रेरितों द्वारा दिया गया यह सुसमाचार ही वह आधार है जिस पर कलीसिया और मसीही नियम बने हैं (इफिसियों 2:19–22)।

इन सात विलक्षण चुनौतियों और अन्तर्दृष्टियों की समीक्षा करें जो पौलुस द्वारा बताए गए सुसमाचार के संदेश में समाई हुई हैं। आप कहां पर कमज़ोर हैं? आपको कहां ठोकर लगती है? इन बहुमूल्य सच्चाइयों तक पहुंच कर इनके द्वारा अपने प्राण को बहाल करके आप उद्धारकर्ता द्वारा दी गई ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के लिए तैयार हो सकते हैं।

मापदण्ड सरल कर बताया गया (आयतें 9-13)

दौड़ में भाग लेने के लिए कहने वाले द्वारा स्वयं उसमें भाग लेने से हमें प्रोत्साहन मिल जाता है। पौलुस ने सुसमाचार के लिए दुख उठाते हुए शानदार उदाहरण पेश करके वही प्रोत्साहन दिया था (2:9–13)। फिलिप्पियों 3:7–9 में उसने कहा था:

> परन्तु जो जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हें मैं ने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। बरन मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों

> को हानि समझता हूं: जिस के कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूं, जिस से मैं मसीह को प्राप्त करूं। और उस में पाया जाऊं; ...।

2 कुरिन्थियों 11:23–31 में उसने अपने कुछ कष्टों को याद किया:

> ... पांच बार मैं ने यहूदियों के हाथ से उन्तालीस–उन्तालीस कोड़े खाए। तीन बार मैं ने बेंतें खाईं; एक बार पत्थरवाह किया गया; तीन बार जहाज़ जिन पर मैं चढ़ा था, टूट गए; एक रात व दिन मैं ने समुद्र में काटा। मैं बार – बार यात्राओं में; नदियों के जोखिमों में; डाकुओं के जोखिमों में; अपने जातिवालों से जोखिमों में; अन्यजातियों से जोखिमों में; नगरों में के जोखिमों में; जंगल के जोखिमों में; समुद्र के जोखिमों में; झूठे भाइयों के बीच जोखिमों में। परिश्रम और कष्ट में; बार – बार जागते रहने में; भूख – प्यास में; बार – बार उपवास करने में; जाड़े में; उघाड़े रहने में। और और बातों को छोड़कर जिन का वर्णन मैं नहीं करता सब कलीसियाओं की चिन्ता प्रतिदिन मुझे दबाती है। ...

मसीह ने भी हमारे लिए कष्ट उठाकर एक नमूना दे दिया था। पहला पतरस 2:21–24 कहता है:

> और तुम इसी के लिए बुलाए भी गए हो ज़्योंकि मसीह भी तुज़्हारे लिए दुख उठाकर, तुज़्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिह्न पर चलो। न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था। वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया। ...

पौलुस के कष्टों की अकड़नें और उनके कारण (आयतें 9, 10)

पौलुस के कष्टों की *अकड़नों* पर ध्यान दें (2:9)। पौलुस को ''कैद'' तक का कष्ट सहना पड़ा था। पौलुस के बंधनों में कम से कम ''ज़ंजीरें'' ऐसी थीं कि कुछ लोग उसके पास जाना भी शर्म की बात समझते थे (1:16)। हम में से बहुत से लोग कभी भी जेल का मुंह नहीं देखना चाहेंगे। ज़्या आप पौलुस की तरह वर्षों तक ज़ंज़ीरों में बंधे रह सकते हैं?

पौलुस ने एक ''कुकर्मी''[12] को दिया जाने वाला कष्ट सहा था। धर्म के एक उत्साही कर्मी को एक अपराधी की तरह दण्ड दिए जाने की बात सुनकर दुख होता है। यह तो न्याय नहीं है! पौलुस को ऐसे ही एक ठप्पे की पीड़ा सहनी पड़ी जैसा कि उसकी स्थिति और उसकी सेवा के ढंग के तुरन्त बाद स्पष्ट बताया गया। उसने बताया कि उसे ज़ंजीरों में ज़्यों रखा गया था।

पौलुस ने 9 और 10 आयतों में अपने कष्ट के *कारण* बताए हैं। काल कोठरी से आनन्द या कैद में आराम नहीं मिल सकता है, परन्तु पौलुस इस बात से आनन्दित था कि ''परमेश्वर का वचन कैद नहीं है'' (देखिए फिलिप्पियों 1:15–20)। मनुष्य परमेश्वर के

वचन को न तो दबा सकता है और न ही उस पर विजय पा सकता है। पौलुस के हृदय में बसे वचन ने उसे जेल की चारदीवारी से आज़ाद कर दिया। कोई इन्सानी ताकत उसे स्वतन्त्र करने से नहीं रोक पाई। पौलुस जिम इलियट के कथन से सहमत होगा: "उस चीज़ को पाने के लिए जो खोई न जाए वह देना जो अपने पास रखी नहीं जा सकती, मूर्खता नहीं है।"[13] लोगों को पौलुस के कष्ट को उचित ठहराने के लिए समय और अनन्तकाल के लिए परमेश्वर के वचन का महत्व बताना ही पर्याप्त था!

एक और विचार ने पौलुस को कष्ट सहने के लिए तैयार किया था। उसने लिखा, "इस कारण मैं चुने हुए लोगों के लिए सब कुछ सहता हूं,[14] कि वे भी उस उद्धार को जो मसीह यीशु में है ... पाएं" (2:10)। पौलुस जानता था कि वह पृथ्वी पर एक बहुत बड़े उद्देश्य और उसे फैलाने के लिए काम कर रहा है। बार्कले ने इसे इस प्रकार अभिव्यक्त किया है!

> उसका क्लेश निरर्थक और लाभरहित नहीं था। यह तथ्य कि वह क्लेश सह रहा था बहुत लोगों के लिए विश्वास करना सम्भव बनाएगा। शहीदों का लहू कलीसिया का बीज बन जाता है; और उस चिता की रोशनी जहां मसीही लोगों को जलाया गया था ऐसी आग को भड़का जा रही है जो कभी बुझेगी नहीं। जब कोई मसीहियत के लिए कष्ट उठाता है तो उसे याद रखना चाहिए कि उसके कष्ट से आने वाले किसी आदमी के लिए मार्ग तैयार होता है। कष्ट सहते हुए हम मसीह के क्रूस का अपने हिस्से का थोड़ा सा बोझ उठाते हैं और लोगों को परमेश्वर के उद्धार में लाने के लिए अपना थोड़ा सा योगदान देते हैं।[15]

पौलुस ने अपनी इच्छा से भी कष्ट सहा क्योंकि वह जानता था कि उद्धार पाने वालों को "अनन्त महिमा" मिलेगी (देखिए रोमियों 8:28–39)। हैंड्रिक्सन लिखता है:

> मसीह यीशु के साथ मेल व्यक्ति को *आत्मा* (जैसे 2 कुरिं. 3:18 में बताया गया है) और *देह* (जैसे फिलि. 3:21 में बताया गया है) में *तेजपूर्ण* बना देता है। और उस अनादि के साथ जुड़कर इस महिमा का कभी अंत नहीं होता (यूहन्ना 3:16)। स्वभाव और समय दोनों में ही यह सांसारिक महिमा से भिन्न है।[16]

छुटकारा दिलाने वाले की विश्वसनीयता (आयतें 11-13)

हमें छुटकारा दिलाने वाले की विश्वसनीयता का आश्वासन दिया गया है। "यह बात सच है" पौलुस द्वारा अक्सर इस्तेमाल किया जाने वाला वाक्यांश है (2:11; देखिए 1 तीमुथियुस 1:15; 3:1; 4:8, 9; तीतुस 3:8)। 11 से 13 आयतों में व्यक्त बात का मूल तो नहीं बताया जा सकता, और कुछ लोगों की तरह इसका अनुमान लगाना व्यर्थ है।[17] पवित्र आत्मा की अगुआई में इन शब्दों को जब एक बार पौलुस ने लिखना बन्द कर दिया, तो वे जो भी थे या जिसने भी कहे थे सब अतीत की बातें हो गई थीं। यह कोई भजन था या नहीं, जैसा कि कुछ लोग संदेह करते हैं, परन्तु एक बात स्पष्ट है कि ये विचार बिल्कुल उस संदर्भ से मेल खाते हैं जिसकी चर्चा

पौलुस तीमुथियुस से कर रहा था। (1) उसकी परीक्षाएं और क्लेश यीशु द्वारा सहे क्लेशों की तरह ही थे। (2) कष्ट सहकर ही उसने विजय पाई (मृत्यु पर भी)। (3) हमारे विश्वासी न रहने पर भी उसका नमूना या आदर्श नहीं बदलेगा। *वह तो विश्वासयोग्य ही रहेगा!*

इन वाक्यांशों के पीछे, हम तीमुथियुस को (और सब मसीहियों को) हर तरह की परीक्षाओं के बावजूद विश्वासी रहने के लिए उत्साहित करने की पौलुस की इच्छा को देख सकते हैं। ऐसा करने के कुछ कारण हैं:

पहला, ''यदि हम उसके साथ मर गए हैं तो उसके साथ जीएंगे भी'' (2:11; रोमियों 6:3–13; इफिसियों 2:1–8; गलतियों 2:20)। मृत्यु यदि प्रभु के साथ जीने का कारण बनती है तो बुरी नहीं है (फिलिप्पियों 1:23)।

दूसरा, ''यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे'' (2:12; मत्ती 24:13; याकूब 5:11; इब्रानियों 10:32–36; 12:2, 3; प्रकाशितवाक्य 3:20–22)। जीवन के इस मोड़ पर इस बुज़ुर्ग प्रेरित की सोच यही थी। स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन के पास उद्धार पाए हुए लोगों के इकट्ठे होने के बारे में उसके विचार कितने शानदार होंगे!

क्लेश सहने वालों के लिए इन दो बहुमूल्य प्रतिज्ञाओं के विपरीत पौलुस ने एक और क्षेत्र का वर्णन किया है जिसमें कुछ लोग होंगे। प्रतिज्ञाएं उन लोगों के लिए भी हैं जो विश्वासी नहीं रहेंगे।

यदि हम उसका इन्कार करते हैं, तो उसके दो तरफा असर को देखा जाएगा जिसमें वह हमारा इन्कार करता है (2:12)। यीशु ने कहा:

> जो कोई मुनष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा। पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा उसका मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करूंगा (मत्ती 10:32, 33)।

हम चाहे अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने में असफल रहें *पर वह अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने में असफल नहीं होगा* (2:13)।

आइए हम उन चेतावनियों को याद रखें (मत्ती 12:36, 37; यूहन्ना 3:36; 8:21, 24; 12:48; प्रकाशितवाक्य 20:11–15)। हमें वैसे ही विश्वासयोग्य रहने की कोशिश करनी चाहिए जैसे यीशु रहा, जैसे पौलुस रहा, और जैसे तीमुथियुस को रहने के लिए पौलुस ने कहा।

परमेश्वर की स्थिति के महत्व तथा मनुष्य के स्वभाव को बार्कले ने इन शब्दों में संक्षिप्त किया है:

> मनुष्य तो अपना इन्कार कर सकता है, लेकिन परमेश्वर अपना इन्कार नहीं कर सकता। ''ईश्वर मनुष्य नहीं, कि झूठ बोले, और न वह आदमी है, कि अपनी इच्छा बदले'' (गिनती 23:19)। जीवन का यह बड़ा तथ्य है कि परमेश्वर उस व्यक्ति को जो अपने आप से ईमानदार होने की कोशिश करता है कभी गिरने न देगा, परन्तु परमेश्वर के साथ सम्बन्ध रखने से इन्कार करने वाले की सहायता

> परमेश्वर भी नहीं कर सकता। बहुत पहले टरटुलियन ने कहा था: "कष्ट से डरने वाला आदमी उसका हो ही नहीं सकता जिसने कष्ट सहा" (टरटुलियन, *डि ज़्यूगा,* 14)। यीशु परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए मरा; और मसीही व्यज़्ति के लिए भी परमेश्वर की उसी इच्छा को मानना आवश्यक है, चाहे उसके लिए कोई भी रोशनी चमके या परछाईं गिरे।[18]

जब कोई कहता है "मुझे नहीं लगता कि मैं विश्वासी रहूंगा" तो ज़्या होता है ? तीमुथियुस के नाम पौलुस के संदेश का अगला भाग इसी प्रश्न और व्यवहार का उज़्र है।

पाठ 6: मापदण्ड एवं शिक्षा की गलती (2:14-18)

तीमुथियुस को गलत ढंग से शिक्षा देने, परमेश्वर के संदेशवाहक या कर्मी के रूप में लज्जित होने, और गलत संदेश देने के विरुद्ध चेतावनियां दी गई थीं। दुख की बात यह है कि आज ये तीनों समस्याएं परमेश्वर के लोगों में से खत्म नहीं हुई हैं।

गलत बातें (आयत 14)

पौलुस ने बताया कि शिक्षा कम से कम दो तरह से गलत ढंग से दी जा सकती है (2:14)। कुछ लोग शज़्दों पर "तर्क-वितर्क"[19] करते हैं जिसका कोई लाभ नहीं होता। ऐसा प्रयास व्यर्थ होने के साथ-साथ खतरनाक भी होता है। पौलुस कहता है कि इससे "कुछ लाभ नहीं होता; वरन सुनने वाले बिगड़ जाते[20] हैं!" ये लोग अन्त में बिगड़ जाते हैं या नष्ट हो जाते हैं अर्थात तीतुस 2:11, 12 में दिए गए उपयोगी, आत्मिक उद्देश्यों को पूरा नहीं कर पाते हैं। यहां पर बुनियादी गलती संदेश में नहीं बल्कि गलत उद्देश्यों और उस ढंग में है जिसमें वह अध्ययन और चर्चा की जाती है।

सही ढंग (आयत 15)

आयत 15 में हमसे परमेश्वर के संदेश को सही ढंग से इस्तेमाल करने का आग्रह किया गया है। पौलुस ने परमेश्वर के वचन को ठीक रीति से काम में लाने के पांच चरणों का एक सकारात्मक ढंग बताया है।

1. हमारे लिए "अध्ययन" करना (KJV) या "प्रयत्न करना" आवश्यक है।[21] बाइबल का सतर्क छात्र ज़्लास आरज़्भ होने से कुछ देर पहले "अपना पाठ ढूंढ़ने" की कोशिश नहीं करेगा! वह तो एक स्पष्ट अर्थात गंभीर छात्र है जो ज्ञान को पाने की लगन से सच्चाई को खोजता है!

2. "परमेश्वर का ग्रहण योग्य[22] ... ठहरने" के लिए। परमेश्वर का वचन मापदण्ड होने और परीक्षा परमेश्वर की नज़र में होने पर ऐसी विश्वसनीयता सचमुच ही सराहनीय होती है! हमारा उद्देश्य ही परमेश्वर को भाने की कोशिश करना है। अध्ययन करने का यह

ढंग कुलुस्सियों 3:22, 23 में सेवा के लिए दी गई पौलुस की शिक्षा से मेल खाता है।

3. इस अध्ययन का परिणाम "काम करने वाला" होता है।[23] हमें इस परिणाम को कभी भी नज़रअन्दाज़ नहीं करना चाहिए। हो सकता है कि कोई अध्ययन तो करता रहे परन्तु सच्चाई के ज्ञान तक कभी न पहुंच सके (देखिए 2 तीमुथियुस 3:7)। अध्ययन तो करता हो पर सेवा न करे। यहां पर पौलुस द्वारा प्रस्तुत किया गया यह वह अध्ययन है जो एक महान सेवक और काम करने को तैयार कर्मी बनाता है!

4. सही ढंग से अध्ययन करना हमें ऐसे काम करने वाले बनाने के लिए तैयार करता है "जो लज्जित न होने पाए।"[24] ऐसा कैसे हो सकता है कि हम भलाई करने में योगदान दें और निन्दा से बच जाएं? पौलुस ने इसका उज़्र अगले वाक़्यांश में दिया है।

5. "सत्य के वचन को ठीक रीति से[25] काम में लाता हो।" विभाजित कलीसियाएं, उद्धार और आराधना के परमेश्वर के ढंग पर डॉक्ट्रिनों व भांति-भांति की शिक्षाओं पर बहस करती हैं: *यह सारी फूट उसी मसीह के नाम में होती है, जिसने प्रार्थना की थी कि जैसे वह और परमेश्वर एक हैं वैसे ही वे लोग सब एक हों* (यूहन्ना 17:17-21; 1 कुरिन्थियों 1:10-13)। ये मतभेद इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं कि बहुत से लोग परमेश्वर के वचन को ठीक रीति से काम में नहीं ला रहे हैं। मसीह की वाचा के अधीन रहते हुए लोगों पर मूसा की वाचा थोपने वाले व्यक़्ति के लिए लज्जित होना उचित है (कुलुस्सियों 2:16; 1 कुरिन्थियों 9:20, 21; मत्ती 28:18-20)। किसी न किसी रूप में, उस शिक्षक को जो मनुष्य की रीति को परमेश्वर की व्यवस्था कहकर थोपता है (मरकुस 7:8-13), कुछ आयतों का दुरुपयोग करके गलत शिक्षा बना लेता है (प्रकाशितवाक़्य 20:3-7; रोमियों 16:17, 18; 2 पतरस 3:15, 16), परमेश्वर के लोगों से ऐसा व्यवहार करता है जैसे अधिकार मसीह के पास न होकर उसी के पास है (देखिए 3 यूहन्ना 9-12) शर्म आनी चाहिए। ऐसी बुराई के विपरीत, बाइबल के हर छात्र को परमेश्वर को भाने वाले, उसकी अगुआई में मिले ढंग से गंभीरता पूर्वक उसके वचन का अध्ययन करने और सेवा की इच्छा करते हुए सच्चाई के वचन को सही रीति से काम में लाने वाला होना चाहिए।

गलत संदेश (आयतें 16-18)

फिर पौलुस ने गलत संदेश की शिक्षा के खतरे पर चर्चा की (2:16-18)। अदन की वाटिका के समय से ही, लोग गलत सोच और झूठे शिक्षकों की मार सह रहे हैं। जिस कारण, सच्चाई तो बनी रहती है, लेकिन लोग उसमें बने नहीं रहते। पौलुस ने तीमुथियुस को अपने आप को इस फंदे से बचाए रखने की चेतावनी दी थी!

पौलुस ने गलत संदेश को "अशुद्ध बकवास" कहा। वास्तव में यह "दोहरी समस्या" है। पहली तो यह कि यह "अशुद्ध" है।[26] "अशुद्ध" के अतिरिक़्त यह संदेश केवल "बकवास" ही है।[27]

पौलुस ने तीमुथियुस को इस प्रकार की बातों से "बचने"[28] की आज्ञा दी थी। जब दिन भर व्यर्थ अनाप-शनाप होने वाला हो तो परमेश्वर के वक़्ता को वहां से खिसक जाना

चाहिए। यदि उसे भीड़ के आरोपों का सामना भी करना पड़े "वह इसका जवाब नहीं दे सकता," तो भी उसे केवल तभी उज़्र देना चाहिए जब उस चर्चा में "प्रभु ऐसे कहता है" के लिए कोई जगह न हो। ऐसी बातचीत से दूर रहने का स्पष्ट कारण इससे मिलने वाला फल अर्थात "अभक़्ति" है।[29] ऐसे माहौल में परमेश्वर या परमेश्वर के वचन की चर्चा भी अभक़्ति का ही कारण बनेगी!

अशुद्ध बकवास से एक आत्मिक एसिड या अज़्ल तैयार हो सकता है जो "सड़े घाव"[30] की तरह प्रभु की आत्मिक देह अर्थात कलीसिया को खा सकता है। गलतियों 5:15 में कहा गया है, "पर यदि तुम एक दूसरे को दांत से काटते और फाड़ खाते हो, तो चौकस रहो कि एक – दूसरे का सत्यनाश न कर दो।"

गलत संदेश प्रसिद्ध हो जाता है ज़्योंकि गलत संदेशवाहक इसे फैलाते हैं। पौलुस ने गलत शिक्षा देने वालों के उदाहरण के रूप में विशेष तौर पर, हुमनियुस और फिलेतुस के नाम गिनाए। फिलेतुस के बारे में केवल 2:17 से ही पता चलता है। वार्ड लिखता है, "*हुमनियुस* पहले भी मिला था (1 तीमु. 1:19 से)। उसने अपने विवेक की बात मानने से इन्कार कर दिया था, अपने विश्वास को तोड़ दिया था, और बाहर कर दिया गया था। ... *हुमनियुस* पाप में लगे रहने का एक उदाहरण है।"[31] यह झूठा शिक्षक केवल अड़ा ही नहीं रहा बल्कि 1 तीमुथियुस से तो लगता है कि वह समस्या पैदा करने में अगुआई भी करता रहा। ऐसे मामलों में उसका नाम पहले है। स्पष्टतया वह और अन्य झूठे शिक्षक 14 और 16 आयतों में वर्णित अशुद्ध बकवास के अखाड़े में डटे हुए थे।

उनके द्वारा ठहराया गया *नमूना* "सत्य से भटक"[32] जाने वालों का है। सत्य के निशाने से चूकने वाला व्यक़्ति ही दूसरों में असत्य को सोखने और फैलाने के लिए प्रमुख व्यक़्ति होता है!

ये दोनों *प्रचार* करते थे कि "पुनरुत्थान हो चुका है" (2:18)। यह मसीह के पुनरुत्थान की बात नहीं थी बल्कि इस ओर संकेत था कि मसीही व्यक़्ति का पुनरुथान हो चुका है। हैंड्रिक्सन का अवलोकन है:

> अब यह माना जाना चाहिए कि पौलुस भी *आत्मिक* पुनरुत्थान अर्थात परमेश्वर के कार्य को मानता था, जिसमें वह पापों और अपराधों में मरे हुए लोगों को नया जीवन देता है (रोमि. 6:3, 4; इफि. 2:6; फिलि. 3:11; कुलु. 2:12; 3:1; और तु. लूका 15:24)। परन्तु बहुत निश्चय है कि यीशु की तरह ही (यूहन्ना 5:28) यह प्रेरित भी *शरीर के पुनरुत्थान* की बात सिखाता था (1 कुरिन्थियों 15; फिलिप्पियों 3:21)। पौलुस की शिक्षा के अनुसार, *शारीरिक पुनरुत्थान से इन्कार का अर्थ विश्वास को पूरी तरह से त्यागना* है, ज़्योंकि "यदि मरे हुओं का पुनरुत्थान ही नहीं, तो मसीह भी नहीं जी उठा; और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है; और तुज़्हारा विश्वास भी व्यर्थ है ... और तुम अब तक अपने पापों में फंसे हो" (1 कुरिन्थियों 15:13, 14, 17)।[33]

यहूदियों के एक गुट अर्थात सदूकियों (लूका 20:27) के साथ कुछ अध्यात्मवादियों (जो शरीर को बुराई के रूप में देखते थे) और कुछ यूनानियों (जो अमरता में तो यकीन रखते थे पर शारीरिक पुनरुत्थान को नहीं मानते थे) ने इस झूठी शिक्षा का खुलकर समर्थन करना था। इस कारण हुमनियुस और फिलेतुस एक झूठी शिक्षा का प्रचार कर रहे थे जिससे मसीही विश्वास के मुज़्य और आवश्यक विश्वासों को क्षति पहुंचती थी!

उनकी शिक्षा का *परिणाम* (फल) यह था कि उन्होंने ''कितनों के विश्वास को उलट – पुलट[34]'' कर दिया। उन्होंने केवल अपना ही नुज़्सान नहीं किया था। यह अच्छी बात है कि परमेश्वर ने हमें ऐसा बनाया है कि हम दूसरों को प्रभावित कर सकते हैं (1 तीमुथियुस 4:12), परन्तु जब लोग अपने प्रभाव का इस्तेमाल लोगों को सच्चाई *से* दूर करने के लिए करते हैं तो दुख होता है! लोग यदि *आपके* पीछे आते हैं, तो आप उन्हें परमेश्वर और सुसमाचार की ओर ले जाएंगे (2 कुरिन्थियों 3:2, 3) या सच्चाई से दूर करेंगे?

पाठ 7: मापदण्ड और एक मसीही की जीवन - शैली (2:19-26)

मानवीय असफलताओं, झगड़े और बिगाड़ से ''परमेश्वर की पज़्की नेंव'' को हिलाया नहीं जा सकता (2:19)। इस ''पज़्की नेंव'' को अलग-अलग लोगों ने (1) चुने हुए,[35] (2) मसीह, (3) कलीसिया, और (4) परमेश्वर की ईश्वरीय सच्चाइयों का नाम दिया है, जिनके द्वारा मनुष्यों को पवित्र किया जाता है।[36] इस आयत के संदर्भ में, तीसरा या चौथा विचार सही होना चाहिए। यदि तीसरा अर्थात कलीसिया वाला विचार सही है, तो यह आदर्श (वास्तविक नहीं) अर्थ में है (जैसे 1 तीमुथियुस 3:14, 15; इफिसियों 5:25, 26; लूका 1:33), ज़्योंकि इसी संदर्भ में कलीसिया के कुछ लोगों को विवाद करते, सांसारिक बकवास करते और लोगों को बिगाड़ते हुए दिखाया गया है। ऐसी स्थिति में तो कलीसिया ''पज़्की'' नहीं बल्कि डांवांडोल व अस्थिर है।

इस संदर्भ में ''पज़्की'' का ज़्या अर्थ है? *यह तीमुथियुस को दिया गया पौलुस का अद्‌भुत संदेश था जिसे उसने चाहा कि वह ''विश्वासी मनुष्यों'' (2:2) को सौंप दे ज़्योंकि यह वह सुसमाचार है जिसे ''कैद'' (2:9) नहीं किया जा सकता, और जब इसे ठीक रीति से काम में लाया जाता है (2:15) तो यह लोगों को ''अनन्त महिमा'' (2:10) के साथ उद्धार दिलाकर परमेश्वर के सामने ग्रहण योग्य ठहराता है।* यही राज्य का बीज (लूका 8:10, 11) और परमेश्वर की पज़्की नेंव है जो हिलाई नहीं जाती बल्कि ''बनी रहती'' है।[37]

परमेश्वर की पज़्की नेंव की एक ''छाप'' है। हैंड्रिज़्सन ने इसका अच्छा विश्लेषण किया है कि इन आयतों में ''छाप'' शज़्द का इस्तेमाल कैसे हुआ है।

> छाप का *संकेत अधिकार* हो सकता है और इस कारण यह किसी भी तरह की छेड़छाड़ से *बचाव* रखता या कम से कम *चेतावनी देता है।* इसी कारण, यीशु की कब्र पर मुहर लगाई गई थी (मज़्ती 27:66)। यह *स्वामित्व का चिह्न* भी हो

सकता है। "मुझे नगीने की नाईं अपने हृदय पर लगा रख" (श्रेष्ठगीत 8:6)। या किसी कानूनी आदेश या किसी दूसरे दस्तावेज़ की यथार्थता *को प्रमाणित करते हुए* और उसकी *गारन्टी* देते हुए उसे *प्रामाणिक ठहराने* के लिए हो सकता है। इसी लिए क्षयर्ष के आदेश में छाप लगाई गई थी (एस्तेर 3:12; देखिए 1 कुरिं. 9:2)।[38]

यदि "छाप" का सम्बन्ध "राज्य के बीज," या परमेश्वर के वचन से है, तो दी गई परिभाषाएं विश्वसनीय लगती हैं क्योंकि वचन सचमुच हमारी रक्षा कर सकता है (मत्ती 4:1-10; रोमियों 1:16; इफिसियों 6:17)। यह इस बात का ऐलान करता है कि हम कौन हैं (रोमियों 8:16, 17; 2 यूहन्ना 9) और वास्तविक और प्रामाणिक होने की छाप या मुहर लगाता है (यूहन्ना 8:31)।

हमारी जीवन - शैली का स्रोत और सार (आयत 19)

"*प्रभु* अपनों को पहचानता है" (2:19) लिखकर पौलुस ने स्रोत के बारे में बताया है। परमेश्वर ने हमें खरीदा है इसलिए हम उसकी सम्पत्तियां हैं।[39] हम उसकी भलाई तथा अनुग्रह के कारण उसके बन सकते हैं। विश्वास करने (यूहन्ना 6:29; रोमियों 10:17), मन फिराने (प्रेरितों 11:16-18; रोमियों 2:4), मसीह में बपतिस्मा लेने (रोमियों 6:3, 4; गलतियों 3:26, 27), और उसकी देह अर्थात कलीसिया में प्रवेश करने (1 कुरिन्थियों 12:13; कुलुस्सियों 1:18) के अवसर हमें उसके वचन के द्वारा मिले, जो आत्मा ने परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त लोगों द्वारा हमें दिया है।

क्योंकि हमारी जीवन - शैली परमेश्वर की रचना है इसलिए हमारे लिए "अधर्म से बचना[40]" (2:19) आवश्यक है। यदि हम अधर्म से नहीं बचते तो परमेश्वर को इसका पता लग ही जाएगा। वह जानता है कि कुछ लोग उसके लोगों को छोड़ देते हैं (इब्रानियों 6:4-6) और वह यह भी जानता है कि कई लोगों को एक दिन राज्य (या कलीसिया) से बाहर निकाल दिया जाएगा (मत्ती 13:47-50; 21:33-46; लूका 13:23-30)। कुछ लोगों को *लगेगा* कि वे उसके हैं, जबकि उसे इसके विपरीत ही पता है (मत्ती 7:20-23)। *वह हमें जानता है!*[41] या तो आज हम अधर्म से बचकर रहेंगे या फिर एक दिन हम उसे अनन्तकाल के लिए हमें उस जगह डालने के लिए कहते सुनेंगे जहां हम रहना नहीं चाहते।

जीवन - शैली के ढंग (आयत 20)

जब हम परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करते हैं, तो हम उसका अपमान कर रहे होते हैं (रोमियों 3:23)। उसने हमें अपने ही स्वरूप पर बनाकर, उससे भी अच्छे उद्देश्य के लिए बनाया था (उत्पत्ति 1:27, 28), ताकि हम भी उसके जैसे बन सकें (मत्ती 5:48; याकूब 1:18; 2 पतरस 1:3, 4)। यहां पर असल बात यह नहीं है कि हम सोना या चांदी या

लकड़ी हैं या नहीं। यीशु सब लोगों के लिए मरा (2 कुरिन्थियों 5:14, 15) और अलग – अलग तरह से इस बात का ऐलान मिलता है कि परमेश्वर जानता है कि एक ढंग दूसरे से अधिक कारगर हो सकता है (मत्ती 25:14–30; 1 कुरन्थियों 12:12–27)। परमेश्वर उन सदस्यों को चाहता है जो अधिक निर्बल हैं और उन्हें ''ज़रूरी'' मानता है। उसकी सामर्थ और अनुग्रह निर्बलता में ही सिद्ध होते हैं (2 कुरिन्थियों 12:7–10)। सब लोग उसके होकर और अनन्तकाल तक उसके कई निवास स्थानों में उसके साथ रह सकते हैं। देखिए, उसने हमसे कितना प्रेम किया है!

इन ''ढंगों'' की वास्तविक परीक्षा इस बात से होती है कि हम ''आदर''[42] के लोग हैं या नहीं। बच्चे माता – पिता का आदर कर सकते हैं (इफिसियों 6:1–3) और पति अपनी पत्नियों का आदर कर सकते हैं (1 पतरस 3:7)। सबसे बढ़कर, मनुष्य के लिए परमेश्वर और उसके पुत्र का आदर करना आवश्यक है।

इसके बिल्कुल विपरीत तथ्य यह है कि हम पर ''अनादर''[43] करने का दोष लग सकता है। परमेश्वर ने हमें अपने स्वरूप पर अर्थात पशुओं से अच्छा अर्थात श्रेष्ठ बनाया (उत्पत्ति 1:26–28); लेकिन यदि हम शैतान जैसे काम करके उसकी संतान बनते हैं (यूहन्ना 8:43, 44), तो हम क्रूर पर पशुओं की नस्ल से और किसी लाश से भी घृणात्मक और बुरे हो सकते हैं! आप अपने जीने के ढंग से परमेश्वर का आदर करते हैं या अनादर?

अपनी जीवन - शैली में सुधार करना (आयतें 21-26)

बेशक हमारा जन्म पापमय संसार में हुआ है, पर जन्म के कारण हमें दोषी नहीं ठहराया जाएगा। बल्कि दण्ड उन्हीं को मिलेगा जो मसीह को नकारते हैं, जिसने हमारे बंधनों और ज़ंजीरों को खोलकर, हमें पाप से छुड़ाने के लिए दाम चुकाया। उसका विद्रोह करने वाला व्यक्ति अपनी ही बनाई कैद (अर्थात पाप; रोमियों 3:23) से नहीं निकलेगा, क्योंकि वह मसीह के अनुग्रह और उसके द्वारा दिए जाने वाले उद्धार को तुच्छ जानकर ठुकरा देता है (यूहन्ना 3:16; इब्रानियों 5:8, 9)।

पौलुस ने अपनी गलती से ऊपर उठने का *ढंग* ''यदि कोई अपने आप को इनसे शुद्ध करेगा'' (2:21) बताया। शुद्ध होने पर हम आदर के लिए बर्तन बनने के योग्य बन जाते हैं (2:20 वाला शब्द ही)। यह हमें परमेश्वर की नज़र में महत्वपूर्ण लोग बना देता है। उसके लिए हमारा महत्व कितना बढ़ जाता है यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि उसका पुत्र हम में से हर एक के लिए मरा।

हम ''पवित्र'' हो सकते हैं।[44] यह इस बात पर ज़ोर देता है कि जो कुछ *वह* हमारे लिए करता है उससे हम आदर के लिए बर्तन बनने के योग्य हो जाते हैं।

जिस कारण, हम ''स्वामी के काम आने वाले[45]'' हो सकते हैं। यदि कलीसिया का हर सदस्य प्रभु के अनुग्रह और दया से ऐसे जुड़ जाए कि प्रभु के लिए हर एक को इस्तेमाल करना *आसान* हो तो कितनी अच्छी बात होगी! उसकी बदलने वाली योग्यता या उसके

कदमों पर चलने का उसके लोगों का स्वभाव, आनन्द से और लाभदायक ढंग से लागू हो सकता है (यूहन्ना 13:17; इफिसियों 4:15, 16)। ज़्या प्रभु *आप को* आसानी से इस्तेमाल कर सकता है?

उसके द्वारा हम "हर भले काम के लिए तैयार"[46] हो सकते हैं। परमेश्वर की सेवा में अपने स्थान और महत्व की समझ आने तक यहां सिखाई गई इन सच्चाइयों पर मनन करते रहें! आप महत्वपूर्ण बर्तन बन सकते हैं!

हमारे अलग होने का *ढंग* "जवानी की अभिलाषाओं से भागने[47]" की पुकार में देखा जाता है।[48] खतरे के वास्तविक और निकट होने पर हम भागते हैं। पाप और लालसाएं जो मृत्यु का कारण बनती हैं (याकूब 1:14, 15) वे वास्तविक और निकट हैं!

मापदण्ड से हमें "पीछा"[49] करने के लिए कुछ समृद्ध करने वाली और सुधारने वाली बातें मिलती हैं। हमें किसका पीछा करना है? पौलुस ने उन कुछ गुणों की उनके फलों के साथ सूची दी जिनका हमें पीछा करना चाहिए:

गुण	**प्रभावित करना या देना**	**लक्ष्य या फल**
धर्म	आचरण (मज़्ी 7:12; रोमि. 12:20, 21)	आत्मिक सेवा
विश्वास	निश्चय (इब्रा. 11:1)	आत्मिक सामर्थ
प्रेम	परवाह (1 कुरिं. 13:1-8)	सेवा करने वाला मन
शांति	सांत्वना; संतुष्टि (फिलि. 4:4-13)	आत्मिक शांति
शुद्धता	संगति (रोमि. 12:10; गला. 6:10)	सामाजिक संतुष्टि

इस सूची को ध्यान से पढ़ें। आपको अधिक गंभीरता से कौन से गुण का पीछा करना चाहिए?

"मूर्खता" और "अज्ञानता" वाले प्रश्न पूछना दो तरह की *गलती* है जिस से बचना चाहिए (2:23; देखिए 1 तीमुथियुस 6:4)। "मूर्खता"[50] कई तरह की हो सकती है। एली याजक इसका एक अच्छा उदाहरण है। 1 शमूएल 2:29; 3:13, 14; 5:18 में, हम देखते हैं कि परमेश्वर ने परमेश्वर के वचन के प्रति उसके व्यवहार के कारण उस पर पांच आरोप लगाए। आप आराधना के लिए परमेश्वर के ढंगों की आलोचना करते हैं या उसकी आज्ञा मानते हैं?

पौलुस ने "अविद्या" वाले अर्थात अज्ञानी व्यज़्ति की बात की थी। यह बेचारा जानता नहीं है और इसे मालूम नहीं है कि यह नहीं जानता। वह एक बालक है! उसे सिखाया जाना ज़रूरी है (इब्रानियों 5:11-14)।

मूर्खता और अज्ञानता की अनाप-शनाप से "झगड़े होते हैं" (2:23ख; 1 तीमुथियुस 6:3-5)। "होते" (यू.: *geinao*) के लिए जन्म देने वाला शज़्द ही इस्तेमाल हुआ है। मूर्खता भरे प्रश्न "झगड़े" को जन्म देते हैं।

जब मसीही लोग ऐसे व्यवहार में फंस जाते हैं तो कुछ गलत हो जाता है। इससे सच्चाई का फल नहीं मिलेगा। इस अखाड़े में सच्चाई को ढूंढ़ने वाला "गलत पेड़ पर पत्थर मार रहा है!"

गलती करने वालों के साथ व्यवहार करने वालों के लिए दिशा निर्देश (आयतें 24-26)

फिर पौलुस ने उस मसीही व्यक्ति की बात की जो सच्चाई का विरोध करने वालों को ''समझाता'' है। हो सकता है कि वे ''सेनापति'' की इच्छा से मन फिराकर ''सुधर'' जाएं।

समझाने वाले को यहां पर प्रभु का दास कहा गया है (2:24), उसमें कई गुण होने आवश्यक हैं जिनका विशेष तौर पर उल्लेख किया गया है:

1. कोमलता। ऐसा मन झगड़ने या संघर्ष करने के विपरीत होता है। झगड़ा बुरे स्वभाव से ही निकलता है (2:23)।

2. सिखाने की योग्यता। इस संदर्भ में वर्णित पश्चाताप रहित लोगों के साथ व्यवहार करने में इस गुण की बड़ी महत्ता है। सही शिक्षक किसी को उसके बुरे मार्गों से प्रेम से निकाल सकता है। सिखाना ''सामने बैठे लोगों को पढ़ाने'' से कहीं बढ़कर है क्योंकि यह किसी विशेष परिस्थिति में दूसरे व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा करना है, जैसे डॉक्टर किसी के लिए दवा लेने और उसका इस्तेमाल करने के लिए लिखता है।

3. सहनशीलता। इस गुण को व्यवहार में लाना, हठी मन वाले व्यक्ति को समझाने के लिए एक शक्तिशाली औज़ार है। भलाई से बुराई पर विजय इसी तरह पाई जा सकती है।

4. नम्रता (2:25)। यह एक मज़बूत और जीवन बदलने वाला गुण है, जिसे वश में रहने वाली शक्ति के रूप में परिभाषित किया जाता है। ''दबाने'' वाले व्यवहार के विपरीत यह गुण दूसरों को बनाता और उठाता है।

5. विरोध करने वालों को समझाने[51] के लिए समझा बुझाकर सिखाना होता है। निर्देशों की ओर ध्यान न देने पर चेतावनी देने और सुधार की आवश्यकता होती है। दण्ड भी देना पड़ सकता है। यह सब कुछ ऐसे व्यक्ति द्वारा किया जाना चाहिए जो नम्र, धैर्यवान और सिखाने में निपुण हो।

गलती करने वालों के लिए मसीह की देह में ऐसे दास ने इस तरह का कितना कार्य किया है? कितने लोगों ने इस योग्यता में अपने आप को खरा पाया है? कितने लोग इस बात का दावा कर सकते हैं कि हम में ऐसे दास हैं?

इस सारी अच्छी प्रक्रिया का आधार यह सच्चाई है कि परमेश्वर मन फिराने[52] का अवसर देगा।[53] इसमें 2 पतरस 3:9 की गूंज सुनाई देती है: ''प्रभु ... तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नाश हो; वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।'' *सेनापति* ''सचेत होकर'' (2:26) हठी और दुष्ट लोगों के घर आ जाने (लूका 15:11–24) की राह देखता है।

मन फिराव सचमुच का होना चाहिए। सच्चाई का ज्ञान ही हमें हमारी मूर्खताओं से छुड़ाएगा। मनुष्य को इसकी ज़रूरत है, और हमारे लिए यह परमेश्वर की इच्छा है। सुसमाचार के हर प्रचारक को सच्चाई से प्रार्थनापूर्वक काम करके इसे पाने के लिए दूसरों की सहायता करना अच्छा लगना चाहिए!

समझकर इन्सान ''होश में आ जाता''[54] है (2:26)। परमेश्वर का सारा अनुग्रह,

मसीह का सारा प्रेम, सुसमाचार की सारी सामर्थ, मसीही लोगों की जो सुसमाचार को लेकर जाते हैं सारी भलाई किसी काम नहीं आएगी यदि पापी लोग उस पुकार को सुनकर मानते नहीं। उनकी हालत यह थी कि वे शैतान के ''फंदे''[55] में आ गए थे। प्रलोभन हम पर कई तरह से आते हैं। वास्तव में हमें बहुत ही सतर्क रहने की ज़रूरत है (1 पतरस 5:8; 1 कुरिन्थियों 16:13)।

सच्चाई का विरोध करने वाले लोग शैतान ''की इच्छा पूरी करने के लिए'' उसके फंदे[56] में फंसकर गलत मार्ग पर चल रहे हैं। शैतान के बहुत से ''कैदी'' जीवित हैं और हमारे आस-पास हैं। 1 तीमुथियुस 5:6 में पौलुस ने उसके एक कैदी के बारे में बताया जो जीते जी मर गया था। यह प्रक्रिया दिखाई नहीं देती, ज्योंकि शैतान *भरमाता* है (यूहन्ना 8:44; इफिसियों 2:1-6)। शैतान उन लोगों पर ''विजय'' पा लेता है जो अधिक विरोध नहीं करते या जो उसके शिकार होने के लिए अपने आप को दे देते हैं। बहुत से लोग उसके जाल में फंसे हुए हैं। *दुख की बात है लेकिन यह एक वास्तविकता है!*

हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए कि उसने हमें मन फिराव का अवसर दिया है (प्रेरितों 11:18)। पृथ्वी पर एक पापी के मन फिराने का आनन्द स्वर्ग में भी मनाया जाता है (लूका 15:3-7)।

संक्षेप में

अध्याय 2 में जीवन और प्रभु से जुड़ी बातों की पौलुस की समीक्षा पर ध्यान दें। ज़रूरत है कि हर सिपाही प्रभु के लिए आगे बढ़े, परमेश्वर के संदेश को ठीक रीति से काम में लाए, जब तक लोगों को यह पता नहीं चलता कि किससे बचना और ज्या प्राप्त करना है, किससे भागना और किसका अनुसरण करना है!

पाद टिप्पणियां

[1]बलवन्त (यू.: *endunamou*) - ''किसी को, ... परमेश्वर या मसीह की सामर्थ मिलना ... फिलि. 4:13; 2 तीमु. 4:17 ... 1 तीमु. 1:12 ... धार्मिक और नैतिक शज़्ति की ... विश्वास में मज़बूत होना, रोमि. 4:20 ... आज्ञाओं का पालन करने में ... इफि. 6:20 ... 2 तीमु. 2:1'' (वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक इंग्लिश लैज़्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर क्रिश्चियन लिटरेचर,* 2रा संस्क. संशो. विलियम एफ़. अर्ड्ंट एण्ड एफ़. विलबर गिंगरिक [शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़. शिकागो प्रैस, 1957], 263)। आदेश सूचक का अर्थ है कि यह होना ही चाहिए, और मध्य स्वर का भाव है, ''हे तीमुथियुस, तू स्वयं यह कर। इस उद्देश्य को तू ही प्रोत्साहित कर।'' [2]देखिए 2 पतरस 3:18; 2 कुरिन्थियों 8:1-7 (आयत 7 अनुग्रह में बढ़ने के छह ढंग बताती है।) 2 कुरिन्थियों 9:8-11 भी देखिए। [3]सौंपना (यू.: *parathou*) - पुन: आदेश सूचक का अर्थ है कि यह होना आवश्यक है और मध्य स्वर का अर्थ है कि भाई इसके लिए अपनी आवश्यकता के प्रति सचेत हों या न, तीमुथियुस इन सच्चाइयों को उन्हें देने के लिए प्रेरित करे! इस कार्य से जुड़े महत्वपूर्ण तथ्य ''सौंपना'' शज़्द की प्रकृति में देखे जा सकते हैं: ''पास रखना, निकट रखना ... (किसी को) सिखाने के लिए सामने रखना ... समझाना ... जमा करना, सुपुर्द करना, सज़्भालने के लिए कोई चीज़ किसी को देना, लूका 12:48; धार्मिक

तौर पर रखने और दूसरों को सिखाने के लिए कोई चीज़, 1 तीमु. 1:18; 2 तीमु. 2:2'' (सी. जी. विल्के और विलिबल्ड ग्रिज़्म, *ए ग्रीक - इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. व संशो. जोसेफ एच. थेयर [एडिनबर्ग, स्कॉटलैंड: टी. एण्ड टी. क्लार्क, 1901; रीप्रिंट सं. ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1977], 486)।[4]दुख (यू.: *sugkakopatheson*) - ''किसी के साथ दुख उठाना, पीड़ा सहना, 2 तीमु. 1:8 ... सुसमाचार के लिए दूसरों के साथ दुख उठाना, 2:3'' (एडवर्ड रोबिन्सन, *ए ग्रीक एण्ड इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* [न्यूयॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1863], 682); ''सुसमाचार के लिए मेरे (जेल में प्रेरित के) साथ दुख उठा, 1:8'' (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 780)। आदेश सूचक से भाव है कि तीमुथियुस के लिए ऐसे दुख उठाना आवश्यक है, और कृदंत से भाव है कि उसे किसी विशेष कार्य या अवसर के लिए ऐसा करने को तैयार रहना चाहिए।[5]फंसाना (यू.: *empleketai*) - आदेश सूचक का अर्थ है कि सिपाही अपने आप को बाहर की बातों के प्रभाव में आने की अनुमति नहीं देता जिससे वह ''फंस'' जाए (''[मूलतः] भेड़ों के लिए जिनकी ऊन झाड़ियों में फंस जाती है, होशे 6:2, 6 से। ... सांसारिक बातों में फंसना, 2 तीमु. 2:4'') (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 256); बटने के लिए, गुच्छा या डोरी बनाना ... 2 तीमु. 2:4 (रोबिन्सन, 243)।[6]प्रसन्न करना (यू.: *arese*) - क्रिया रूप इस बात का ऐलान करता है कि प्रसन्न करने के लिए कोई प्रयास करता है; परन्तु बात इससे हल नहीं होती, क्योंकि जो व्यक्ति लिखने का काम करता है वह स्वीकृति के लिए मापदण्ड ठहरा लेता है। परन्तु उद्देश्य तो प्रसन्न करना है ... मत्ती 14:6; मरकुस 6:22; रोमि. 8:8; 15:2; 1 थिस्स. 2:15; 4:1; 1 कुरिं. 7:32-34; गला. 1:10; 2 तीमु. 2:4 ... प्रसन्न करने को प्रयासरत; दूसरों के विचारों, इच्छाओं, के अनुसार अपने आप को बना लेना'' (थेयर, 72)।[7]विलियम बार्कले ने तुलनात्मक पौलुस द्वारा सिपाहियों के बार-बार इस्तेमाल पर ध्यान दिया (1 तीमुथियुस 1:18; फिलेमोन 2; फिलिप्पियों 2:25) और ये अवलोकन शामिल किए: ''मनुष्य की तस्वीर सिपाही के रूप में और उसका जीवन एक अभियान के रूप में होने को रोमी और यूनानी लोग अच्छी तरह जानते थे। ... ऐपिक्टेटुस का कहना था, 'हर मनुष्य का जीवन अभियान की तरह है, और अभियान भी ऐसा जो लम्बा और अलग - अलग है।' ... तो फिर सिपाही की क्या योग्यताएं थीं जिनका बार-बार पौलुस ने मसीही जीवन में उल्लेख किया? (1) सिपाही की सेवा लक्ष्य पर *केन्द्रित सेवा* होनी चाहिए। ... सिपाही केवल सिपाही ही होता है और कुछ नहीं। एक मसीही को अपना ध्यान अपनी मसीहियत पर लगाना चाहिए ... उसे अपनी मसीहियत के अनुसार जीने और उसे दिखाने के लिए जो भी कार्य करना पड़े करना चाहिए। (2) सिपाही का काम *आज्ञा मानना* होता है ... तुरन्त और बिना कोई संदेह किए आज्ञा मानने से उसका और दूसरों का जीवन बच जाता है। ... (3) सिपाही के *बलिदान* देने के लिए तैयार होना आवश्यक है। ... मसीही व्यक्ति को अपने आप का, अपनी इच्छाओं का, अपनी लालसाओं का, अपने भविष्य का परमेश्वर और अपने साथियों के लिए बलिदान करने को तैयार रहना चाहिए। (4) सिपाही का *विश्वासयोग्य* होना आवश्यक है'' (विलियम बार्कले, *द लैटर्स टू तिमोथी, टाइटस एण्ड फिलेमोन,* द डेली स्टडी बाइबल सीरीज, संशो. संस्क. [फिलाडेल्फिया: वैस्टमिंस्टर प्रैस, 1960] 182-84)।[8]लड़ना (यू.: *athlese*) - क्रिया रूप इस बात का ऐलान करता है कि यह आवश्यक नहीं है कि कोई ऐसा ही करे, परन्तु शब्द विन्यास इस बात का ऐलान करता है कि लड़े बिना मुकुट नहीं पाया जा सकता! शब्द कड़ी प्रतिस्पर्धा का है: ''बॉक्सिंग, डिस्कस फैंकने, कुश्ती करने, दौड़ लगाने आदि खेलों में जीतने के लिए लड़ना, संघर्ष करना। ... 2 तीमु. 2:5'' (रोबिन्सन, 15); ''... प्रेरितों के ... कार्य क्षेत्र में मुकाबले के लिए लड़ना ... वे मृत्यु तक लड़ते रहे ... हमें जीवित परमेश्वर की प्रतिस्पर्धा में लड़ना है'' (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 20)।[9]समझ (यू.: *sunesis*) - ''दो नदियों का इकट्ठे दौड़ना, इकट्ठे बहना ... समझ, लूका 2:47; 1 कुरिं. 1:19 ... इफि. 3:4; कुलु. 2:2; 2 तीमु. 2:7'' (थेयर, 604); ''समझ, बुद्धि, चतुराई, बुद्धिमत्ता ... सूक्ष्म दृष्टि की क्षमता'' (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 796)।[10]ध्यान (यू.: *noei*) - इस तरह का विचार करना एक निरन्तर प्रक्रिया होती है। शब्द का अर्थ ''विवेकपूर्ण विचार या मन से चिंतन, अनुभव करना, समझना, गहन समझ पाना ... आज्ञाओं को सही ढंग से समझना ... विचार करना, ध्यान देना, सोचना ... पाठक (इन शब्दों पर) विचार करे, मत्ती 24:15; मरकुस 13:14 ... मेरी बात पर ध्यान दे, 2 तीमु. 2:7 ... सम्मानपूर्वक मन में रखना''

(अर्डंट एण्ड गिंगरिक, 542)।

[11]स्मरण (यू.: *mnemoneue*) – ''याद रखना ... लूका 17:32; यू. 15:20; 16:4, 21; प्रेरितों 20:35; 1 थिस्सलु. 1:3 ... किसी व्यक्ति के लिए सोचना और महसूस करना ... कुलु. 4:18 ... गला. 2:10 ... ध्यान में रखना ... 2 तीमु. 2:8'' (थेयर, 416)। [12]कुकर्मी (यू.: *kakourgos*) – ''अपराधी, बुराई करने वाला ... जो दुष्कर्म व गंभीर अपराध करता है ... लूका 23:32 से, 39; 2 तीमु. 2:9'' (अर्डंट एण्ड गिंगरिक, 399)। [13]एलिज़ाबेथ इलियट, *शैडो ऑफ़ द अलमाइटी* (न्यूयॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1958), 15. [14]चुना हुआ (यू.: *eklektos*) – ''मसीह का चुना हुआ, ... लूका 23:35 ... उनकी बात जिन्हें परमेश्वर ने मनुष्य जाति की सामान्यतया [से] अपनी ओर खींच लिया है – मत्ती 20:16 ... 22:14. इसलिए विशेष तौर पर मसीही लोगों के लिए ([पुराने नियम] के इस्राएलियों की तरह, 1 इति. 16:13; भ. सं. 88:4; 89:3; यशा. 65:9, 15, 23 ... क्योंकि सामान्यतया श्रेष्ठ ही चुना जाता, पसन्द होता, उत्तम होता है ... रोमि. 16:13 ... 1 पत. 2:4, 6)'' (अर्डंट एण्ड गिंगरिक, 242)। [15]बार्कले, 193. [16]विलियम हैंड्रिक्सन, *ए कमैन्ट्री ऑन 1 एण्ड 2 तिमोथी एण्ड टाइटस* (लंदन: द बैनर ऑफ़ ट्रुथ ट्रस्ट, 1964), 254. [17]जो कुछ पौलुस ने यहां दिया उसकी पृष्ठभूमि का कुछ अध्ययन हैंड्रिक्सन (254-60) और बार्कले (194-95) में मिलता है। [18]बार्कले, 195. [19]तर्क – वितर्क (यू.: *me logomachein*) – ''शब्दों पर झगड़ना; प्रासंगिक रूप में, व्यर्थ और झगड़ा बढ़ाने वाले मामलों में बहस करना: 2 तीमु 2:14'' (थेयर, 380)। [20]बिगड़ जाते (यू.: *katastrophe*) – ''पतन, विनाश ... 2 पत. 2:6 ... मसीह को समर्पित आत्मा का विनाश ... 2 तीमु. 2:14'' (थेयर, 337); ''सर्वनाश ... विनाश का दण्ड ... सुनने वालों का विनाश'' (अर्डंट एण्ड गिंगरिक, 420)।

[21]प्रयत्न करना (यू.: *spoudason*) – ध्यान दें कि यह आवश्यक (अर्थात आदेश सूचक) है और शब्द का अर्थ भी ''जल्दी करना ... प्रेरितों 20:16 ... लूका 2:16 ... सच्चे मन से इच्छा करना है ... 2 पत. 3:12'' (थेयर 584); ''के लिए ... उमंग होना, लगन से करना, परिश्रमी होना ... प्रयास करना'' (अर्डंट एण्ड गिंगरिक, 769)। [22]ग्रहण योग्य (यू.: *dokimos*) – ''परखे जाने पर सही पाया जाना ... 2 कुरिं. 10:18; 13:7; 2 तीमु. 2:15 ... सम्मानित व प्रतिष्ठित ... बहुमूल्य'' (अर्डंट एण्ड गिंगरिक, 202)। [23]काम करने वाला (यू.: *ergates*) – ''मज़दूर ... मत्ती 10:10; लूका 10:7; 1 तीमु. 5:18 ... जो शिक्षकों के रूप में लोगों में मसीहियत के प्रचार तथा प्रसार के लिए परिश्रम करते हों; 2 कुरिं. 11:13; फिलि. 3:2; 2 तीमु. 2:15'' (थेयर, 248)। [24]लज्जित न होना (यू.: *anepaischuntos*) – ''शर्मिंदा, गैर ज़िम्मेदार हुए बिना, 2 तीमु. 2:15'' (रोबिन्सन, 54)। [25]ठीक रीति से काम में लाना (यू.: *orthotomeo*) – ''सीधा काटना, ... अपना मार्ग सीधा बनाना, रास्ता बताना। ... 2 तीमु. 2:15; सत्य के वचन को सीधा काटना, अर्थात इसकी शिक्षा सही ढंग से और कुशलता से देना'' (रोबिन्सन, 515); ''सांसारिक बहस या अशुद्ध बातों की ओर मुड़े बिना सीधे मार्ग के साथ – साथ (अपनी मंजिल तक जाने वाले सीधे मार्ग की तरह) सत्य के वचन की अगुआई देना, 2 तीमु. 2:15 ... वचन की शिक्षा सही ढंग से देना, इसकी व्याख्या ठोस ढंग से करना, सही ढंग से रूप देना'' (अर्डंट एण्ड गिंगरिक, 584)। [26]अशुद्ध (यू.: *bebelos*) – ''किसी की भी पहुंच तक, सांसारिक, अपवित्र, ... कर्मकांडी अर्थ में नहीं ..., बल्कि एक नैतिक और [धार्मिक] शब्द के रूप में ... सांसारिक तथा बूढ़ी स्त्रियों की कहानियां, 1 तीमु. 4:7 ... सांसारिक और इधर-उधर की बातें ... 2 तीमु. 2:16 ... ईश्वर रहित ... 1 तीमु. 1:9'' (अर्डंट एण्ड गिंगरिक, 138) [27]बकवास (यू.: *kenophonia*) – ''निरर्थक बातें ... गप्पें, 1 तीमु. 6:20; 2 तीमु. 2:16'' (अर्डंट एण्ड गिंगरिक, 429); ''... व्यर्थ और अर्थहीन बातों की चर्चा'' (थेयर, 343)। [28]बचना (यू.: *periistaso*) – ''... पास खड़ी भीड़, यूहन्ना 11:42 ... दर्शक ... बचने के लिए जाना ... 2 तीमु '' (अर्डंट एण्ड गिंगरिक, 653); ''कुछ बचाने के उद्देश्य के लिए ... घूम जाना, इस प्रकार बचने के लिए ... तीतु. 3:9'' (थेयर, 503)। [29]अभक्ति (यू.: *asebeia*) – ''परमेश्वर के प्रति भय की कमी, अशुद्धता ... रोमि. 1:18; 2 तीमु. 2:16; तीतु. 1:12 ... अशुद्ध विचार तथा काम, रोमी 11:26 ...'' (थेयर, 79)। [30]सड़ा घाव (यू.: *gaggraina*) – ''कैंसर, नासूर, ... बदनामी का ...

फैलना 2 तीमु. 2:17" (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 148); "शरीर का नाश, जो सारे शरीर में धीरे – धीरे फैलता है" (रोबिन्सन, 134); "एक रोग जिससे सूजन के कारण शरीर के किसी भाग में इतनी अधिक पीड़ा होती है कि, उचित उपचार करने के बावजूद वह दोष धीरे – धीरे फैलता रहता है, दूसरे अंगों पर असर करता है और अन्त में हड्डियों को खा जाता है ... (गैंगरिन)" (थेयर, 107)।

[31]रोनल्ड वार्ड, *कमैन्ट्री ऑन 1 एण्ड 2 तिमोथी एण्ड टाइटस* (वैको, टैज़्सस, वर्ड बुक्स, 1974), 173. [32]भटक गए (यू.: *astocheo*) – "असफल होना, हटना ... विश्वास के विषय में निशाने से चूकना ... 1 तीमु. 1:6 ... 6:21; 2 तीमु. 2:18 ... किसी का नुक़्सान करना ... जो (वचन तथा कर्म में) भटक गए हैं" (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 117)। [33]हैंड्रिक्सन, 265. [34]उलट – पुलट (यू.: *anatrepousin*) – "गिरने ... विनाश का कारण होना ... औंधा हो जाना ... पूरे परिवारों का नाश होना, झूठी शिक्षा से ... तीतु. 1:11" (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 62)। क्रिया से यहां पर चलती रहने वाली प्रक्रिया का संकेत मिलता है; लोगों का विश्वास अभी भी "डांवांडोल" हो रहा था। [35]"चुने हुए" की धारणा कैल्विनवादी विचारधारा की एक गलत शिक्षा है [36]हैंड्रिक्सन, 266; बार्कले, 201–4; वार्ड 175–76. [37]रहना (यू.: *hesteken*) – "रखना ... किसी निश्चित उद्देश्य के लिए आगे रखना, ... प्रेरितों 1:23 ... 6:13 ... स्थापित करना, पुष्टि करना, मान्य बनाना या मानना ... रोमि. 3:31 ... इब्रा. 10:9 ... रोमि. 10:3 ... इसी को स्थिर बनाना ... मत्ती 26:15 ... स्थिर रहना, डटे रहना (भ. सं. 35:13; 36:12) ... नींव स्थिर रहती है (हिलाई नहीं जाती) 2 तीमु. 2:19" (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 282–83)। पूर्णकाल इस बात का ऐलान करता है कि परमेश्वर की नींव स्थिर है और स्थिर रहेगी। [38]हैंड्रिक्सन, 267. [39]1 कुरिन्थियों 6:19, 20; 7:23; 1 पतरस 1:18, 19; 2:9–11. [40]बचना (यू.: *aposteto*) – आदेश सूचक का अर्थ है कि यह होना चाहिए, कृदंत का अर्थ "झुकने" के बजाय टूट जाना, और एक वचन का अर्थ है कि यह एक निजी बात है अर्थात हर किसी के लिए या तो टूट जाना या फिर छोड़ जाना होना चाहिए। मूल यूनानी शब्द *aphisteme* का अर्थ है "... भाग जा, छोड़ दे ... लूका 2:37 ... उजाड़ ... प्रेरितों 15:38; दूर रहना ... 2 तीमु. 2:19; होशे 6:1, 4 ... दूर होना" (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 126)।

[41]मेरविन विन्सेंट ने "परमेश्वर के जाने हुए" और हमारा "परमेश्वर को जानना" का सर्वेक्षण किया है। 2 तीमुथियुस 2:19 पर अपनी टिप्पणी से, उसने गलतियों 4:9 पर बनी आज्ञाओं की बात की। फिर उसने लिखा: "परमेश्वर और उसके पुत्रों के बीच ज्ञान का सम्बन्ध परमेश्वर से ही शुरू होता है। गलतिया के लोग परमेश्वर के ज्ञान तक अन्तर्ज्ञान या किसी तर्क से नहीं पहुंचे थे। 'परमेश्वर उनके द्वारा अपने आप को जानने से पहले उन्हें जानता था, और उसका उन्हें जानना ही उनका उसे जानने का कारण बना' (इडी)। [तुलना करें] 1 कुरिं. 13:12; 2 तीमु. 2:19; मत्ती 7:23. डीन स्टेनली टिप्पणी करता है कि 'परमेश्वर के बारे में हमारा ज्ञान हमारे अपने कार्य से अधिक उसका कार्य है।' यदि परमेश्वर किसी मनुष्य को जानता है, तो उस तथ्य का अर्थ परमेश्वर का कार्य है जो मनुष्य के ऊपर से होकर जाता है, ताकि वह, परमेश्वर के ज्ञान के विषय के रूप में, परमेश्वर की जानकारी में आ जाए।" (मैरविन आर. विन्सेंट, *वर्ड स्टडीज़ इन द न्यू टैस्टामेंट,* अंक 4 [ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1957], 139, 304)। विन्सेंट की बात सही है, परन्तु यह इस तर्क से निकली है कि कुछ कैल्विनवाद की शिक्षा की ओर झुकाव रखती है, जिसमें यह निष्कर्ष निकाला गया है कि पदार्थ में मनुष्य की कोई इच्छा नहीं है। *ऐसा विचार 2 पतरस 3:9; प्रेरितों 10:34, 35; यूहन्ना 3:16; यहोशू 24:15 और प्रकाशितवाक्य 22:17 जैसी आयतों में नकारा गया है। परमेश्वर अपनों को उसकी इच्छा पूरी करने से जानता है, परन्तु फैसला हम ही करते हैं कि हमने उसकी इच्छा को पूरा करना है या नहीं।* [42]आदर (यू.: *time*) – "कीमत, मोल, ... सम्मान, श्रद्धा ... एक कार्य के रूप में सम्मान, भय, आदर दिखाना ... किसी को मिलने वाला आदर। ... विश्वासियों से *समय* की प्रतिज्ञा की गई है। 1 पत. 2:7 ... इब्रा. 3:3 ... उपयोग के द्वारा सम्मान (या अपमान) का बर्तन। रोमि. 9:21; 2 तीमु. 2:20 से। ... कीमती वस्तु; यहेज. 22:25 ... अधिकतर स्वर्गीय चीज़ें: रोमि. 2:7 ... पद 10 ... *आदर* योग्य होना" (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 825); "कीमत तय करना ... पुरस्कार की वस्तु ... प्रकाशित 21:24 ... दूसरों से ऊंचे दर्जे, श्रेष्ठ व्यक्ति का सम्मान ... इब्रा. 2:7, 9; 2 पत. 1:17 ... उसकी सराहना जिसे योग्य माना गया हो, 1 पत. 3:7"

(थेयर, 624)। [43]अनादर (यू.: *atimia*) – ''अपमान ... 1 कुरिं. 11:14 ... 2 कुरिं. 6:8; 1 कुरिं. 15:43 ... किसी मृत देह की अनुचितता और अप्रियता के लिए इस्तेमाल होने वाला ... 2 कुरिं. 11:21 ... नीच लालसाएं, बुरी इच्छाएं, रोमि. 1:26; 9:21; 2 तीमु. 2:20'' (थेयर, 83)। [44]पवित्र करना (यू.: *egiasmenor*) – ''पवित्र, अभिषेक करना ... परमेश्वर की ओर से पवित्रता की मुहर किसी तक भी जिसका परमेश्वर से कोई भी सम्बन्ध हो जाना ... सांसारिक चीज़ों से अलग करके परमेश्वर को समर्पित करना ... मन का सुधार करके अन्दर से पवित्र करना: यूहन्ना 17:17, 19 (सच्चाई के ज्ञान से, तु. यू. 8:32); 1 थिस्सु. 5:23'' (थेयर, 6)। सिद्ध इस बात का संकेत देता है कि पवित्र होने की प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी है और कर्मवाच्य का अर्थ है कि यह किसी दूसरे या बाहर के किसी स्रोत से हुई है। हम अकेले इसे नहीं पा सकते थे। [45]काम आने वाला (यू.: *euchrestos*) – ''आसानी से इस्तेमाल होने वाला, लाभदायक, उपयोगी, 2 तीमु. 2:21; 4:11; फिले. 11'' (रोबिन्सन, 309)। [46]तैयार (यू.: *hetoimasmenon*) – मूलत: ''तैयार किया हुआ''; ''आवश्यक तैयारियां करना, सब कुछ तैयार करना, लूका 12:47 ... यात्राओं पर जाने वाले राजाओं के लिए रास्ते साफ़ करना और उन्हें गुज़रने के योग्य बनाने के लिए लोग भेजने की शाही परम्परा से लिया गया ... मसीहा का अच्छी तरह स्वागत करने और उसकी आशिषें प्राप्त करने के लिए लोगों के मनों को तैयार करना: मत्ती 3:3; मरकुस 1:3; लूका 3:4 ... 1:76 ... प्रकाशित. 8:6 ... खूबसूरती से सजाया गया, प्रकाशित. 21:2 ... कुछ भी पाने के लिए योग्य, 2 तीमु. 2:21; प्रकाशित. 9:7'' (थेयर, 255)। ''पवित्र किए जाने'' की तरह, यह भी मन की तैयारी का संकेत देता है (शुभ कर्मों के लिए तैयार – देखिए इफिसियों 2:10) और यह परिवर्तन किसी दूसरे स्रोत द्वारा किया गया था (कर्मवाच्य)। [47]अभिलाषाएं (यू.: *epithume*) – ''... पीछा करना, लालसा करना, ... पर अपना मन लगाना ... के लिए इच्छा करना, उन लोगों की बात जो विशेष चीज़ों को ढूंढ़ते हैं'' (थेयर, 238)। [48]भाग (यू.: *pheuge*) – ''(पलायन करके बचना) किसी घृणित वस्तु, विशेषतया बुराई से दूर रहना ... 1 कुरिं. 6:18 ... 1 तीमु. 6:11; 2 तीमु. 2:22'' (थेयर, 651)। पौलुस की संरचना के अनुसार, यह किया जाना *आवश्यक* है और *अभी* होना चाहिए (वर्तमान काल)। [49]पीछा करना (यू.: *dioke*) – भागने के जैसी, इस संरचना को भी *किया जाना आवश्यक है,* और अभी किया जाना चाहिए (वर्तमान काल में)। बुराई छोड़ देने (उससे भागने) के बाद भलाई करने के लिए मुड़ने में कोई समय न गंवाएं। खाली दिमाग शैतान का कारखाना होता है। (देखिए मत्ती 12:43-45)। ''पीछा करना'' (यू: *dioko*) का अर्थ ''किसी व्यक्ति या वस्तु को पकड़ने के लिए तेज़ी से भागना, के पीछे भागना, लगे रहना ... [प्रतीकात्मक अर्थ में] उसके लिए जो लक्ष्य तक पहुंचने के लिए तेज़ी से भागता है, फिलि. 3:12 ... लूका 17:23 ... प्राप्त करने के लिए उत्सुकता व गंभीरता से प्रयास करते हुए ढूंढ़ना ... 1 तीमु. 6:11; 2 तीमु. 2:22'' (थेयर, 153)। [50]मूर्खता (यू.: *moros*) – ''अविवेकी, बिना दूरदर्शिता या बुद्धि के ... खाली, व्यर्थ ... 2 तीमु. 2:23; तीतु. 3:9 ... अशुद्ध, ईश्वर रहित होना (क्योंकि ऐसा व्यक्ति उद्धार से जुड़ी बातों को नकारता और उन्हें तुच्छ जानता है), मत्ती 5:22'' (थेयर, 420)।

[51]समझाना (यू.: *paideuo*) – ''सुधारने के लिए शब्दों या बातों से डांटना या फटकारना: उन लोगों के विषय में जो सुधारने और उपदेश देने से दूसरों के चरित्र को बदल रहे हैं, 2 तीमु. 2:25'' (थेयर, 473)। [52]मन फिराव (यू.: *metanoia*) – ''मन का बदलना ... उन लोगों की बात जो अपनी बुराइयों और गलतियों को घृणित मानने लगे हैं, और उन्होंने जीवन की एक अच्छी दौड़ में प्रवेश करने की ठान ली है, क्योंकि इसमें पाप और शोक को पहचानने की समझ आ जाती है और जीवन में सुधार आता है, जिसके चिह्न और असर अच्छे काम हैं'' (थेयर, 450-51)। [53]देना (यू.: *doe*) – ''इच्छाबोध इच्छा की अभिव्यक्ति में इस्तेमाल होने वाली क्रिया का सामान्य रूप है'' (एच. ई. डैना एण्ड जूलियस आर. मैंटे, *ए मैनुअल ग्रामर ऑफ़ द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट* [न्यू यॉर्क मैकमिलन कं., 1955], 173)। नये नियम में इस बोध का इस्तेमाल केवल सतासठ बार हुआ है। आत्मा के इस मन फिराव के लिए परमेश्वर के योगदान की दोहरी इच्छा का ऐलान करने के लिए पौलुस द्वारा यहां इसका उपयुक्त उपयोग किया गया है। परमेश्वर के योगदान पर ''इच्छा करना'' के बोध पर ज़ोर देना ही नहीं बल्कि इस शब्द का अर्थ ''अपने ही लाभ के लिए, किसी द्वारा अपनी सहमति से देना ...

उपहार के रूप में देना ... उपलव्ध कराना है।'' (थेयर, 145)।[54]होश में आ जाना (यू.: *ananepho*) – ''फिर से सचेत होना ... होश में आना, ठीक होना, 2 तीमु. 2:26'' (रोबिन्सन, 48); ''शैतान के चंगुल से निकलना और स्वस्थ मन'' होना (थेयर, 40)।[55]फंदा (यू.: *pagis*) – ''किसी अचानक और अप्रत्याशित खतरनाक जोखिम के लिए कोई जोखिम, हानि या विनाश की वस्तु, रोमि. 11:9 ... पाप के प्रलोभन और बहकावे ... 1 तीमु. 6:9 ... नीति. 12:13, तु. 29:6 ... पाप जिससे शैतान किसी को बंदी बना लेता है, 2 तीमु 2:26; 1 तीमु. 3:7'' (थेयर, 472)।[56]फंदे में डालना (यू.: *ezogremenoi*) – ''जीवित पकड़ना, कैदी बनाना ... काबू करना ... विजय पाना ... लूका 5:10 ... 2 तीमु. 2:26 ... शैतान ... द्वारा बंदी बनाया जाना, फंदे में फंसाना, प्रलोभन देना'' (रोबिन्सन, 319)। पूर्ण काल का अर्थ है कि इन लोगों को केवल ''विकट स्थिति में डाला'' ही नहीं गया था। उन्हें बंदी बनाने का काम पूरा हो गया था। ज़्योंकि परमेश्वर उन्हें अभी भी मन फिराव का अवसर देगा, इसलिए उनकी स्थिति आशाहीन नहीं है (देखिए इब्रानियों 6:4–6), *परन्तु* कोशिश करना उनका काम है! कर्मवाच्य इस बात की घोषणा करता है कि वे अपने आप को इस स्थिति में शैतान द्वारा लगाए गए बाहरी प्रभावों से लाते हैं।